

इतिहास विषय के लिए वृक्षिकार तक

व्योधिक-डाकामत वृक्षिकार (Verbal-Linguistic Intelligence): डाका, पड़ा, लेखा एवं बला-इनमें सबसे अधिक विषय व्योधिक-डाकामत वृक्षिकार के लिए आवश्यक है। इसमें उम्र वा विज्ञान और अर्थमें दिक्षा थेके बलावे एवं लेखावे शब्दों का विचार करा यह थाके। एक इसमें लक्ष्य यह डाकार व्याख्या व्यवहारों की है। समाज-वृक्षिकारों द्वारा एक डाकार मूल्यांकित है लानावे निक-डाकार व्याख्यान, शब्दों का अर्थकृति एवं इटेम्सों और इनमें सबसे अधिक विषय व्योधिक-डाकामत है।

ऐ विषय वृक्षिकार वार थाके तिनि कोन्सो विषय पड़ा, बला वा लेखावे थेके सूक्ष्म हैं। शब्दचयन थेके शब्दविनिर्माणपर प्रति भौतिक विषय के लिए आवश्यक है। तिनि शब्द लिये नानावे छिंदा थेके लक्ष्य करते कालाचूटा, प्रश्नरचनावे करते साहित्यार विभिन्न छेत्र भौतिक विषय करते लक्ष्य परिचय देते। संग्रहित विषय लिये अन्यान्यावे सबसे अलोकनाम लिये उत्तर तक तक लिये। विभिन्न विषयों ओपर विधिवत् (formal) व्यक्तिवावे राखेत। फलविनिष्ट लेखालिख वा मजावे कथा बलावेत एवं शब्दों कुटि लेता तार। यह शब्द शब्दों का लक्ष्य लिये लेखा किंवा कोन्सो विषय सम्बन्धीत अनुसन्धान एवं लियेते लियेते लियेते राखेत।

गणितिक-व्योधिक वृक्षिकार (Mathematical-Logical Intelligence): संख्या, गणित आव वृक्षिकार तितिते गणितिक-व्योधिक वृक्षिकार आमदेवे जीवने उम्मावे यह टेटे लेता डिम्पल-संखामत-मृगमत-वर्णमत एवं आकम आतो अनेक रूप-विभिन्नति (Pattern) वा व्याख्या देते। रूपविनिर्माणपर वास्तविकता थेके लक्ष्य करते एवं वृक्षिकार मानवके उत्तीत करते उम्मावे उम्मावे आकार-आकार-उम्मावे उम्मावे विषयों ओपर अलीष्ट। ऐता सामाजिक संख्या- विभिन्न गणितिकसूत्रादि लिये काज करते इत्यावे विषय लक्ष्य करते। अलिङ्गत भवसावे समाधानके ऐता चालावे विषये लेते। लियेते यूके अलिङ्गत ऐता अलावे लियमानुप्रयोधिक अव्याहार लिये थाकेत।

ऐ विषय वृक्षिकारी वाकिरी धारणामध्ये अलावे पठेमूलक आव विष्ट है। ऐता आवधिक रूपविनिर्माणपर ऐतन रुक्षप ओ प्रधक प्रताक करते, वा सराव चोथे पाठे ना। ऐ विषय वृक्षिकार वार थाके तिनि विविध विविधपर मथा लिये नाना ऊटिल समसामयिक (Cosmic) जित्तासावे समाधारने लियेते व्याप्त राखेत। विभिन्न परिशिष्टि ओ यानुवावे आकार-आकार-उम्मावे उम्मावे विषयों ओपर अलीष्ट। ऐता सामाजिक संख्या- विभिन्न गणितिकसूत्रादि लिये काज करते इत्यावे विषय लक्ष्य करते। अलिङ्गत भवसावे समाधानके ऐता चालावे विषये लेते। लियेते यूके अलिङ्गत ऐता अलावे लियमानुप्रयोधिक अव्याहार लिये थाकेत।

चाकू-स्थानिक वृक्षिकार (Visual-Spatial Intelligence): 'एक दिवि शाजावे शब्द समावे' वा 'देखावे विज्ञान'-आमदेवे अनेक समये ऐतन कथा बले थाकि। बला बाहला, एटो एक विषय वृक्षिकारों भूक्त वा मानवों एवं विषय वृक्षिकारों आमदेवे चाकूवावावे बहुत पठेम-विलास-वक्षा-रूपविनिर्माण इत्यादि वा देखि तार सबसे आमदेवे मत्तिते घटे लेता नानावे आवाक करा घटेवावे रुक्षप ओ उपलक्षि करति।

चाकू-स्थानिक वृक्षिकार समूक वाकिमानोंरे डिकलावे प्रति विषये थाके थाके। तीरा चारपाल बहु, तार पठेम, रुक्ष, विलास, एवं रूपविनिर्माणिक व्याख्यावे विषेवतावे अवहित हैं। ऐता देखन कला-माटि, कासज इत्यादि लिये काज करते तालावासेव, तेमनै जिप्स पाजल (Jigsaw puzzle), मालिति आर्वेष्टलेरे मत्तो काजओ तौदेवे ताला लावे। बला लेता ऐता केवल चर्चेष्टुतै लेखन ना, अर्धचूम्ह लावाओ अपूर्व रूप लियावे करते।

आत्मविश्वासक वृक्षिकार (Intrapersonal Intelligence): ऐ वृक्षिकार कोन्सो थाके आमदेवे वाकिमानों एवं तिनपीलता, एप्पनिय साहावोई आमदेवे यूक वाकिवार्थेर वाईवे आसते थावि एवं सेहूप्रते आलसकपाटिके

যথামুক্তভাবে বুঝতে পারি। একেই বলে অন্তর্ভূতি বুদ্ধিমত্তা। মানবের প্রবণতার উপর ভিত্তি করেই এই বুদ্ধিমত্তা জাগতিক বিষয়বস্তুসমূহের যাথার্থতা(Meaning), উদ্দেশ্য(Purpose) এবং তাৎপর্য(Significance) অনুসন্ধান করে দেখতে চায়। ব্যক্তির সচেতনতাকে নিজের ক্ষেত্রে অন্তর্ভুক্ত করে আন্তর্বর্তিকিগত বুদ্ধিমত্তা ব্যক্তির অন্তর্ভুক্ত, তার আবেগ, মূল্যবোধ, বিশ্বাস এবং যথাবিধ আধ্যাত্মিকভাবে বহন্তরীয় অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হয়।

এই জাতীয় বুদ্ধিমত্তা যে ব্যক্তির পরিচায়ক, তিনি একাকী-নীরবে-নিভৃতে কাজ করতে পছন্দ করেন। আন্তর্ভেতনা আর আন্তর্সচেতনতাই এইদের সকল কাজের ভিত্তি। এই কারণেই এইসমস্ত মানুষ নিজেকে অন্তরান্তভূতি(Inner Feeling), আন্তর্গত মূল্যচেতনা(Values), বিশ্বাস(Beliefs), এবং ঘৃতস্তু চিন্তন পদ্ধতিতে গড়েপিঠে নেন। এইরা হল সৃষ্টিশীল বুদ্ধি আর বিশেষ অন্তর্ভেতনার ধারক এবং প্রথরভাবে সজ্ঞাত(Highly intuitive)। নিভাষ্ট বাহ্যিক বা বহির্জগতের পূরন্ধার এইদের আকৃষ্ট করে না। পরিবর্তে এইরা পথ চলেন অন্তর্ভেতনার আলোয়। এইরা হল প্রথর ইচ্ছাপ্রক্রিয়ের অধিকারী, আন্তরিক বিশ্বাসী। যেকোনো বিষয়ে সূচিত্বিত ও সুনির্দিষ্ট মতামত এইরা দিতে পারেন।

শারীরিক উপলক্ষিগত বুদ্ধিমত্তা(Bodily-Kinesthetic Intelligence): আমরা অনেকময়ই ‘করতে করতে শেখা’র কথা বলে থাকি। মজার কথা হলো শারীরিক সঞ্চালন(Physical movement) এবং শারীরবৃত্তীয় ধারণা(Knowing of our physical body)-ই কিন্তু আমাদের এই করতে করতে শেখা বিষয়টির মূল ভিত্তি। বলতে গেলে কি করে একটা মোটরবাইকে চড়া যায়, কিভাবেইবা একটি মোটরকে আরেকটি মোটরের সমান্তরালভাবে রাখা যায়, কিভাবেইবা ওয়ালেটজ নাচ নাচ যায় ইত্যাদি বি঵িধ কৌশল রপ্ত করা যায়—তা যৌক্তিক বুদ্ধিবলে যত না আয়ত করা যায়, তার চেয়ে শারীরবৃত্তীয় প্রক্রিয়ায় অনেক বেশি আয়ত করা সহজ।

শারীরিক উপলক্ষিগত বুদ্ধিমত্তা যার যতো বেশি তার শারীরিক সচেতনতাও সমধিক। সেক্ষেত্রে শরীরচালনা, নৃত্য, ইন্সট্রুমেন্টের প্রতি শারীরিক উপলক্ষিগত বুদ্ধিমত্তাসম্পর্ক ব্যক্তির বিশেষ ঝৌক লক্ষ্য করা যায়। সেই ব্যক্তি অন্যায়ে তাঁর শারীরিকভাবে বা ভঙ্গির মাধ্যমে অন্যের সঙ্গে তাবের আদান প্রদান করতে পারেন। অন্যের অনুকরণেও এইরা সুন্দর হল। শারীরিক খেলাধূলা এইদের প্রিয় বিষয়। বেশিক্ষণ একজায়গায় বসে থাকা বা নিভাষ্ট অকর্মন্তের মতো সময় কাটানো এইদের ভীষণ অপছন্দের।

আন্তর্বর্তিক বুদ্ধিমত্তা(Interpersonal): এই বিষয়টি একেবারেই ব্যক্তি থেকে ব্যক্তির জানা-বোঝা-শেখার সঙ্গে জড়িত। দলগতভাবে কোনো কাজের ক্ষেত্রে সেই দলের অন্তর্ভুক্ত কোনো ব্যক্তি এই বুদ্ধিমত্তা অর্জন করতে পারেন। তিনি বুঝতে পারেন কিভাবে নিজের সঙ্গে দলের অন্যান্য সদস্যদের সম্পর্কস্থাপন করতে হবে। এই বোঝাপড়ার সূত্র ধরেই বৃহত্তর ক্ষেত্রে গড়ে ওঠে সামাজিক দক্ষতা, যা ব্যক্তির সঙ্গে ব্যক্তির পারস্পরিক সুসম্পর্ক ও আদান-প্রদানের ক্ষেত্রে অত্যন্ত জরুরি।

যাঁদের মধ্যে এই বিশেষ বোধ গড়ে ওঠে তাঁরা অটীরেই হয়ে ওঠেন বক্ষুবৎসল। অন্যের পাশে প্রয়োজনে এইদের সবসময়ই পাওয়া যায়। দলবক্ষতভাবে কাজই এইদের বিশেষ পছন্দের। এইরা যেমন অন্যের উপলক্ষি-ধারণার প্রতি সংবেদনশীল হন, তেমনি নিজের চিঠ্ঠি-ভাবনাকে অন্যের মধ্যে ছড়িয়েও দিতে পারেন(Pigbacking)। বিভেদ-অন্যায়ে আলাপ-আলোচনার মধ্যে দিয়ে অন্যকে কোনও বিষয় বুঝিয়ে দিতেও এইরা বিশেষ পারদর্শী। বিভেদ-বিবাদ মিটিয়ে শান্তি প্রতিষ্ঠার ক্ষেত্রেও এই বিশেষ বুদ্ধিমত্তায় সমৃদ্ধ ব্যক্তির ভূমিকা অত্যন্ত সদর্শক।

প্রকৃতিবাদী বুদ্ধিমত্তা(Naturalist Intelligence): এই বুদ্ধিমত্তা একান্তভাবেই প্রকৃতিসম্মত। বিশ্বপ্রকৃতিতে নিয়ত ঘটে চলা নানান ঘটনাসূত্রেই এই বুদ্ধিমত্তার উল্লেখ। প্রকৃতির শ্বীকৃতি(Recognition), স্বতি(Appreciation), বোধ(Understanding) এই বুদ্ধিমত্তার ভরকেন্দৰ। এখানে কোনো বিশেষ প্রজাতির বিচ্ছিন্নতা-প্রকৃতির সাথে তার

সম্পর্ক-সম্বন্ধ বিশেষ পুরুষ পায়। বিভিন্ন উদ্ভিদ(Flora) ও প্রাণীর(Fauna) চিহ্নিকরণ এবং শ্রেণিকরণও এই বিশেষ বুদ্ধিমত্তার এলাকাধীন।

এই বুদ্ধিমত্তায় সমৃক্ষ ব্যক্তি মাত্রেই বহির্বিশ্ব, তার প্রণীকুল-গাছসালা তথা সমন্বয় প্রাকৃতিকসম্পদকেই প্রাণ ঢেলে তালোবাসেন। আবহাওয়ার উপরতি-বিলতি থেকে শুরু করে গাছের পাতার পতন-উচ্চালন, বাতাসের ধ্বনি, সৌরতাপের উষ্ণতার ত্বাস-বৃক্ষ, গৃহের ভূজাতিভূজ কীট-পতঙ্গ—প্রতিটি বিষয়ই প্রকৃতিবাদী বুদ্ধিমত্তার ক্ষেত্রে বিশেষ মূল্য পায়। এমন বুদ্ধিমত্তায় প্রাণিত যুক্ত ছারপোকা-পাহাড়ি পাতাসহ নালাল প্রাকৃতিক সম্পদের সংগ্রহে মনোনিবেশ করতেই পারে। প্রকৃতিবাদীবুদ্ধিমত্তায় সমৃক্ষ ব্যক্তি প্রকৃতির প্রতিটি বিষয় সম্পর্কেই বিশেষ শুক্ষ্মভাজন হল।

বাদ্য-ছন্দোগত বুদ্ধিমত্তা(Musical-Rhythmic Intelligene): শব্দ আর শব্দনমই এই জাতীয় বুদ্ধিমত্তার মূল। কেবল সঙ্গীত আর ছন্দেই এর শেষ নয়, শব্দ(Sound), -স্বর(Tone), স্বরকম্প(Beats)-কম্পনশেলী(Vibrational pattern) ক্রতি(Auditory) -কম্পন(Vibration) ও কম্পনশেলী(Vibrational pattern) -এর সঙ্গে তথা সমগ্র সাঙ্গীতিকক্ষেত্রের সঙ্গে নিবিড় সম্বন্ধসূত্রে ক্রতি(Auditory) ও কম্পন(Vibration) এই বুদ্ধিমত্তাকে পরিপূর্ণ করে।

এই বুদ্ধিমত্তায় সমৃক্ষ ব্যক্তি সঙ্গীত আর ছন্দোশেলীর বিশেষ গুণগ্রাহী হল। প্রকৃতি এঁদের বিশেষ প্রিয় বিষয়। বিঁকির ডাক, ছাতে বৃষ্টির ধ্বনি, জলতার কোলাহল সবই এঁদের পর্যবেক্ষণের প্রিয় বিষয়। এঁরা অত্যন্ত সূজনশীল। শব্দ-সূর এঁদেরকে এভটাই প্রভাবিত করে যে, একবারমাত্র শুনেই এঁরা নতুন সূর বেঁধে নিতে পারেন। স্বরে-শব্দে-সূরে এঁরা দৃশ্যত এভটাই আঘ্নিত হল যে তার প্রতিক্রিয়া ছুটে ওঠে এঁদের চোখে-মুখে। সঙ্গীত সৃষ্টিই শুধু নয়, বহব্যাস্থ বিচ্ছি সঙ্গীত শুনতেও এঁরা বিশেষ উৎসাহী হন। এঁরা অনুকরণ(Mimiking), যথার্থ উচ্চারণ(AccentS) এবং সমূজ্ঞত বাচনশেলী (Speech patterns) তে এঁরা বিশেষ দক্ষ হল। তাঁরা সহজাতভাবে একটি সঙ্গীতবন্ধ(Composition) -এ ব্যবহৃত সাঙ্গীতিক অনুষঙ্গ(Musical instruments)কে পৃথক-পৃথকভাবে চিহ্নিতও করতে পারেন।